भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु में 14 सितम्बर से 20 सितम्बर 2018 तक " हिंदी सप्ताह " का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु में "हिंदी सप्ताह" का आयोजन 14 सितम्बर, से 20 सितम्बर, 2018 तक मनाया गया। इस अवसर पर 14 सितम्बर 2018 को "हिंदी सप्ताह" के उद्घाटन पर ब्यूरो की निदेशक महोदया, डॉ. चाँदिश आर. बल्लाल ने, रा. कृ. की. सं. ब्यू., बेंगलूरु के सभी कर्मचारियों को "हिंदी सप्ताह" के आयोजन पर शुभकामनाएं दी और कहा कि मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि "आज हम सब यहाँ पर हिंदी सप्ताह मनाने के लिए एकत्र हुए हैं। जैसे कि आप सभी को मालूम ही है, कि हिंदी भाषा देश के अधिकांश क्षेत्रों के वर्ग द्वारा बोली और समझी जाती है और भारत-वर्ष की संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ और व्यापक बनाने में भाषा सदैव से एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी रही है। हमारी जो भाषा होती वह केवल बोलचाल और काम-काज का माध्यम ही नहीं है बल्कि हमें एक सूत्र में बांधने का काम भी करती है। देश में आप कहीं भी जायें तो हम देखते हैं कि सभी क्षेत्रों में हिंदी समझने वाले मिल जाते हैं। सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है, किन्तु अभी भी इस पर और अधिक ध्यान देने कि जरुरत है, इसके लिए आवश्यक है कि संस्थान में सरकारी काम मूल रूप से हिंदी में हो। राजभाषा हिंदी का प्रयोग एक संवैधानिक आवश्यकता है और यह प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का समान दायित्व है। आजकल कम्प्यूटर में सभी प्रकार के सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं, जिनकी सहायता से हम अपना पूरा काम आसानी से हिंदी में कर सकते हैं। आज इस अवसर पर हम सब यह संकल्प लें कि आज से ही हम अपने-अपने सरकारी काम हिंदी में करेंगे।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय अंतरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) से आयी श्रीमती बी. के. हेमा जी ने राजभाषा हिंदी के महत्व एवं कार्यालयों में कार्यान्वयन सम्बंधित विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। डॉ. ओमप्रकाश नाविक, वैज्ञानिक ने, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव एवं कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के द्वारा हिंदी सप्ताह के उपलक्ष्य पर भेजी गयी अपील को सभागार में पढ़ा गया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में, डॉ. सूरज सिंह राजपूत, जो कि ब्यूरो की अनुसन्धान सलहाकार समिति के सदस्य हैं, उन्होंने सरकारी कार्यालयों और व्यवहारिक रूप में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की भूमिका पर विस्तृत रूप से अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. सूरज सिंह राजपूत ने, राजभाषा हिंदी का भारत वर्ष में प्रचार-प्रसार और उसके प्रयोग की उपयोगिता का विस्तृत रूप से व्याख्यान किया, उन्होंने वैज्ञानिकों और हिन्दी से जुड़े कर्मचारियों की महत्ता बताते हुए आग्रह किया कि सब मिलकर नयी-नयी तकनीकों को किसानों की भाषा में किसानों तक पहुँचाए इससे हमारी प्रौद्योगिकी ज़मीन से जुड़े किसानों तक पहुँचेंगी।

श्रीमती दिपन्विता, सहायक, श्री संजय, वरिष्ठ अनुसन्धान फेलो, श्रीमती नाज़िया अंजुम, वरिष्ठ लिपिक, डॉ. राघवेंद्र ए., तकनीकी सहायक, डॉ. बी. के. चौबे , श्री रामचन्द्रप्पा, वित्त एवं लेखा अधिकारी, डॉ. भक्तवत्सलम, प्रधान वैज्ञानिक, श्री पी. के. सोनकुसरे, वरिष्ठ तकनीकी सहायक, श्रीमती उमा, आशुलिपिक, श्रीमती रेखा, दक्ष सहायक और डॉ. चाँदिश आर. बल्लाल, निदेशक राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु ने " हिंदी सप्ताह " के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों जैसेकि - हिंदी गायन, हिंदी निबंध लेखन (विषय :किसान की आमदनी दोगुनी करने में जैविक खेती की भूमिका), टिप्पण एवं ड्राफ्टिंग, आदि में सक्रिय रूप से भाग लिया कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को उनके प्रदर्शन के आधार पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गए।

डॉ. रिचा वार्ष्णेय, वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस समारोह का संचालन श्री सतेंद्र कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने किया।

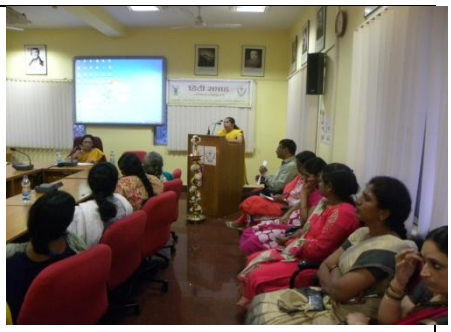

राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु में 14 सितम्बर से 20 सितम्बर 2018 तक आयोजित " हिंदी सप्ताह " के कुछ फोटो

राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु में 14 सितम्बर से 20 सितम्बर 2018 तक आयोजित " हिंदी सप्ताह " के कुछ फोटो

राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलूरु में आयोजित " हिंदी सप्ताह " के समय लिया गया ग्रुप फोटो